संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : ८ ● २३ फरवरी, २०१६ फाल्गुन कृष्णपक्ष सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस पर उमड़ा जनसैलाब

महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस विश्व जागरूकता के रूप में मनाने का आह्वान–देवेन्द्रपाल वर्मा

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 192 जन्म दिवस पर 12.2.2016 दिन- शुक्रवार को आर्यवीर दल के संयुक्त तत्वावधान में दयानन्द बाल विद्यामन्दिर बड़ौत बागपत में आयोजित कार्यक्रम नगर में जागरूकता रैली निकाली गयी जो नगर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरी इसके पश्चात् विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में आर्यवीर दल (उ.प्र.) द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरूस्कृत किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि आर्यवीर दल के प्रधान सेनापति डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती ने कहा कि आर्य समाज राष्ट्र प्रेम की ज्योति को प्रज्ज्वलित करने वाला संगठन है-जो अनेकता में एकता की

भावना को पुष्ट करता है, उन्होंने सभी से आर्य समाज से जुड़कर राष्ट्र के प्रति समर्पित होने का आवाहन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी ने अपने उद्‌बोधन में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस को "विश्व जागरूकता" दिवस के रूप में मनाने का आह्वाहन किया। उन्होंने महर्षि की निर्भीकता व सत्यनिष्ठा का उल्लेख करते हुए कहा "अनेक राजाओं आदि के द्वारा प्रलोभन दिये जाने के बावजूद मूर्तिपूजा खण्डन व वेदों का प्रचार नहीं छोड़ा। अंग्रेज अधिकारियों के समक्ष निर्भीकता पूर्वक "स्वराज्य" को ही अच्छा बताया विदेशी (अंग्रेजी) शासन की निन्दा की। अपने जीवन पर्यन्त उन्होंने जल मन को जगाने का भरसक प्रयास किया। अपने जीवन की परवाह न करते हुए हर समय प्रयासरत रहे।

उन्होंने खेतों की बाउन्ड्री पर लगाये जाने वाले कंटीले तारों को हटाने का आवाहन किया कहा कि इसमें फंसकर वन्य जीव अकाल मौत के गाल में समा रहे हैं। समारोह की अध्यक्षता नगर पालिका के चेयरमैन के.पी मलिक तथा संचालन रवि शास्त्री व श्री धर्मवीर जी आर्य ने संयुक्त रूप से किया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष डॉ. धीरज आर्य जी, श्री अरविन्द कुमार सभा उप प्रधान, डॉ. आर. आर.डी. उपाध्याय, श्री ओ.पी. चौधरी, श्री विनय आर्य, श्री यशपाल आर्य, श्री सुनील आर्य, श्री विनोद भारद्वाज, श्री अनंगपाल आर्य, श्रीमती पूनम देवी, श्रीमती नवनीत आर्या, राजेश रूहेला आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

आर्य समाज उतरौला (बलरामपुर) का 83वां वार्षिकोत्सव आयोजन

दिनांक 7 मार्च से 10 मार्च तक

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य समाज उतरौला (बलरामपुर) का 83वां वार्षिकोत्सव 7 मार्च से 10 मार्च तक मनाया जायेगा। जिसमें अनेक विद्वान सन्यासी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। वार्षिकोत्सव में आप सादर आमंत्रित हैं।

-अनिल कुमार आर्य, अध्यक्ष
9532248554, 9450034925, 9838339664

वेदामृतम्

रायो बुध्नः संगमनो वसूनां, यज्ञस्य केतुर् मन्मसाधनो वेः।
श्रमृतत्वं रक्षमाणास एनं, देवा अग्नि धारयन् द्रविणोदाम्।।

ऋग् १.६६.६

(परमात्मा-रूप अग्नि) (यशः) ऐश्वर्य का (बुध्नः) मूल, (वसूनां) वसुओं का (संगमनः) संगमकर्ता, (यज्ञस्य) यज्ञ का (केतुः) प्रज्ञापक, (और) (वेः) कर्मशील जीवात्मा के (मन्मसाधनः) विचारित कार्यों को सिद्ध करने वाला है। (अमृतत्वं) मोक्ष-रूप अमरत्व की (रक्षमाणासः) रक्षा करते हुए (देवाः) विद्वान लोग (एनं) इस (द्रविणोदां) धन और बल के दाता (अग्नि) परमात्मा को (धारयन्) धारण करते हैं।

आओं, हम 'द्रविणोदा अग्नि' को हृदय में धारण करें। तुम पूछोगे, यह द्रविणोदा अग्नि कौन है? द्रविण धन और बल का नाम है, उसका दाता परमेश्वर ही द्रविणोदा अग्नि कहलाता है। वह परम प्रभु निर्धनों को आत्मिक और भौतिक धन देता है, निर्बलों को आत्मिक और शरीरिक बल प्रदान करता है।

वह सर्वविध सम्पत्ति का मूल है। ये जो विविध सत्य, अहिंसा, वशित्व आदि आध्यात्मिक सम्पत्तियाँ है और जो हीरे-मोती, सोना-चाँदी आदि सांसारिक सम्पत्तियाँ हैं, इन सबका मूल स्रोत वही है। वह वसुओं का संगमकर्ता है। ऋषियों ने आठ वसु बताये हैं - अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, सूर्य, द्युलोक, चन्द्रमा और नक्षत्र। इनमें पारस्परिक संगति लाने वाला वही है, अन्यथा ये एक-दूसरे के विरोधी होकर आपस में ही टकराकर चूर-चूर हो जाते। वह 'यज्ञ का केतु' है, यज्ञ की ध्वजा बनकर लहरा रहा है, यज्ञ का प्रज्ञापक है। उसका अपना कोई भी कार्य यज्ञहीन नहीं है, अतएव हम सबको यज्ञ का उपदेश कर रहा है। वह 'मन्म-साधन है, कर्मशील जीवात्मा के विचारित कार्यों को सिद्ध करने वाला है। जीवात्मा यदि उसे साक्षी रूप में अपने सम्मुख रखकर किन्हीं सत्कार्यों को करने का संकल्प करता है, तो वह उसके उस संकल्प को पूर्ण कराने में प्रबल सहायक बनता है। अतएव जो देव हैं, दिव्यता के पुजारी हैं, ज्ञान और चरित्र से विद्वान् हैं, वे अपने जीवनकाल में ही इस द्रविणोदा अग्नि की कृपा से अमृतत्व प्राप्त कर जीवन्मुक्त हो जाते हैं और निधि के समान उस अमृतत्व की निरन्तर रक्षा करते हुए धन एवं बल के प्रदाता इस द्रविणोदा अग्नि को स्थायी रूप से धारण कर लेते हैं, अपनी अन्तरात्मा का अनिवार्य अंग बना लेते हैं।

डा० रामनाथ

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

आर्य समाज ही राष्ट्र को नष्ट होने से बचा सकता है।

आज हमारे राष्ट्र को हमारी संस्कृति को विनष्ट करने के लिए सभी तरह के उपाय किये जा रहे हैं। यह देश कभी विश्व गुरू था। सारे विश्व के लोग अपनी ज्ञान पिपासा शान्त करने अपनी उन्नति का मार्ग जानने के लिए हमारे देश की ओर ही देखते थे। महाभारत काल से हमारी गिरावट आरम्भ हुयी, जब गुरूजन राजघरानों के बच्चों को पढ़ाने के लिए उनके घरों में जाने लगे। इसका प्रभाव हममें राजा, रंक, रईस गरीब का भेद पनपा। पहले जहां वेदानुकूल जीवन अपनाकर सबमें एकत्व ममत्व का भाव उपजता था वहीं ऊँच नीच का भेद पैदा होने लगा।

परमात्मा ने सृष्टि की रचना जीवात्माओं के कल्याण के लिए की है। सभी जीवात्माओं को उनके पूर्वकृत कर्मो के आधार पर शरीर देता है। जिनके निकृष्ट कर्म रहे उन्हें कीट पतंग, पशु पक्षी के शरीर दिये उसको भोग योनि की संज्ञा दी। जिनके कर्म अच्छे अधिक थे, उनको मानव का तन दिया गया। उन्हें कर्म करने की स्वतंत्रता दी गयी, जिन्हें कर्म करने की स्वतंत्रता नहीं दी उनके योग कर्म के रूप में बांटे जिनसे वह सम्पूर्ण सृष्टि के सुख साधन उत्पन्न करके अपने कुकर्मों का फल प्राप्त करके पुनः मानव तन पाने का अधिकार प्राप्त करें। जिन्हें मानव तन देकर कर्म करने की स्वतंत्रता दी उन्हें सही व गलत के ज्ञान के लिए आदि सृष्टि में वेद का ज्ञान दिया। माता पिता की गोद दी गुरू जनों का सान्निध्य दिया जिनके माध्यम से सुशिक्षित होकर धर्म, अधर्म, कर्त्तव्य अकर्त्तव्य सत्य असत्य का परिज्ञान प्राप्त करने का सुयोग मिला।

हर युग में अच्छे बुरे लोग होते रहे हैं। अच्छे जन जो पूर्वा पर का विचार करके सभी के हितार्थ कार्यों का सम्पादन करते हैं उन्हें आर्य एवं उसके विपरीत आचारी को अनार्य कहा जाता है। आर्य आदणीय और अनार्य निन्दनीय होता है। महाभारत काल में वेद विरूद्धाचारियों का उपद्रव बढ़ने लगा और देश के राज परिवार में संघर्ष प्रारम्भ हो गया। अधर्म के बढ़ते उफान को देखकर योगेश्वर कृष्ण ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति अधर्म के विनाश व धर्म स्थापन में लगा दी। जब उन्हें समझाने में सफलता न मिली तो युद्ध प्रारम्भ हुआ। महाराज कृष्ण ने धर्म पक्ष का ही साथ दिया युद्ध में विजय धर्म की हुई। परन्तु जो अधर्म का अंकुर उपज चुका था वह पूरी तरह से नष्ट न हुआ। धीरे धीरे गिरावट होती गयी, वेद ज्ञान का लोप होने लगा। मानव रचित पुराण आदि ग्रन्थों का बाहुल्य होने लगा। पुराण प्रचलित हुये जिनमें परमात्मा के विविध नामों में से एक नाम की प्रशस्ति और दूसरे की निन्दा का स्वरूप गढ़ा गया। उन्हें ही धर्म ग्रंथ मान लिया गया। फलतः आपस में विग्रह बैर विरोध बढ़ने लगा। उसी के परिणाम स्वरूप विदेशी यवन आक्रमणकारियों ने हमारे देश पर आक्रमण प्रारम्भ किये। हमें पराधीन बनाते रहे, हमारी सम्पदा लूटते रहे। पुराणपंथी धर्मगुरू हमारे अन्दर भीरूता भरते रहे (यह कहकर कि परमात्मा स्वयं प्रकट होकर शत्रु का संहार करेंगे)। यवनों के बाद अंग्रेज व्यापारी बनकर यहां आये हमें पराधीन बनाया हमें कंगाल किया और सदा सदा अपना गुलाम रखने के लिए हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति खत्म करके अपनी हमें सदा दास बनाये रखने वाली शिक्षा पद्धति चला दी। हमारे अन्दर पराधीनता की भावना गहरी होती गयी। हम उसी में रमकर अपने स्वत्व को भुलाते रहे। दासता में ही सुख ढूँढते रहे।

"हमारे सौभाग्य से महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। पराधीनता के मूल में नारी शोषण, उसका उत्पीड़न, ढोंग, पाखण्ड, वैदिक शिक्षा का अभाव, जिससे अशिक्षा, ऊँच नीच का भेद जाति पांति का भेद बढ़ता गया। बस उन्होंने सभी सुखों से परिपूर्ण राष्ट्र बनाने की भावना से सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की- आवाज लगायी वेदों की ओर लौटो- और कहा कि आर्य समाज कोई नया मत पन्थ या सम्प्रदाय नहीं है। ब्रह्मा से जैमिनी ऋषि प्रतिपादित वैदिक धर्म में आ गयी बुराइयों को दूर करने का एक आन्दोलन है। आर्य ही राष्ट्र को संवार सकते हैं अतः सभी आर्य जनों मातृशक्ति का सम्मान करो उसकी पीड़ा नष्ट करो। बिना किसी वर्ग जाति भेद के संगठित होकर राष्ट्र को पुनीत समृद्ध बनाओ। विदेशियों ने हमारी संस्कृति सभ्यता के विनाश के लिए अपनी शिक्षा पद्धति चला रखी है। अपनी प्राचीन वैदिक शिक्षा पद्धति को पुनः लाओ और अपने गौरव को जानो। जागृति आई बालक बालिकाओं के वैदिक विद्यालय और गुरूकुल खुलने लगे। स्वराज्य आन्दोलन चला जिसमें आर्य समाज के 85 प्रतिशत आर्य नर नारियों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। अपनी सरकार बनी अपना संविधान बना जिसमें महर्षि दयानन्द के सभी मन्तव्य समाहित किये गये। परन्तु शासन की कुर्सी पर बैठने वालो ने विदेशी शिक्षा व्यवस्था नहीं बदली। केवल देश की भौतिक समृद्धि में लग गये। फलतः भौतिक समृद्धि में देश उत्तरोत्तर प्रगति पर है परंतु नैतिक चरित्र का उत्तरोत्तर ह्रास ही होता जा रहा है। चाहे धार्मिक क्षेत्र हो चाहे सामाजिक क्षेत्र हो चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो सभी जगह नैतिक चरित्र का ह्रास हो रहा है। धर्म के नाम पर अनैतिक चरित्र वाले सन्त भिन्डरवाला, सन्त आशाराम बापू, सन्त रामपाल दास जैसे चरित्रहीन उत्पन्न होकर धर्म का विनाश कर रहे है। सामाजिक क्षेत्र में पदों की लालसा में सामाजिक नेता गुटबाजी में लगकर सामाजिक सुधार को भुला रहे हैं तो राजनीतिक नेता अपनी अपनी सत्ता बनाने के लोभ में केवल वोट बैंक बढ़ाने की लालसा से देश के हित का विचार किये बिना एक दूसरे के विरूद्ध भाषणबाजी व लामबन्दी में लगे हैं। ऐसे में देश को नष्ट करने की भावना वाले तत्व अपने कार्यो में संलग्न है। विदेशी तत्व हमें पराधीन बनाने की जुगत में लगे हैं तो विदेशी मानसिकता क दास वृत्ति वाले हमारे घर के जय चन्द बनकर हमारी संस्कृति को विनष्ट करने के उपायों में जी-जान से लगे हैं।

अतः ऐसे विकराल काल में आर्य समाज आन्दोलन की नितान्त आवश्यकता है। हम सजग और सचेत होकर अपने को सच्चा आर्य बनायें, घर परिवार समाज को सच्चा आर्य बनने की प्रेरणा दें। पराधीन वृत्ति का सर्वथा परित्याग करने का संकल्प लें। अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी, अपनी भारतीय वेशभूषा को अपनायें। दूसरों को उसकी प्रेरणा दें। अंध श्रद्धा क विरूद्ध आवाज उठायें श्रद्धा को धारण करके सभी को श्रद्धावान बनने का मार्ग दर्शन दें। अश्रद्धा न पनपने दें। धर्म का सच्चा स्वरूप जान और मानकर सभी को सच्चे धर्म के स्वरूप को बताने में प्रवृत्त हों। निश्चय ही जिस क्षण हम अपने को सच्चा आर्य बना लेंगे हम संगठित होकर राष्ट्र को सभी विघ्न बाधाओं से बचाने में प्रयत्नशील होंगे तो कोई भी बाधा हमारे राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर जाने से रोक नहीं सकेगी। भ्रष्टाचार अनाचार, नारी शोषण मारकाट की भावना ध्वस्त होगी। हम सुखी समृद्ध राष्ट्र के नागरिक बनेंगे और पूर्व की भांति हमरा देश सम्पूर्ण विश्व के मार्गदर्शक बनने का सौभाग्य प्राप्त करेगा।

-सम्पादक

माई भगवती जी विषयक तथ्य एवं अपेक्षित गवेषणा

-भावेश मेरजा

अगस्त २०१५ में आर्य मन्तव्यों के प्रसार हेतु सक्रिय लोगों ने फैसबुक पर आर्य समाज के ही एक सज्जन का कार्टून बनाकर उसके नीचे लिखा - राजधानी दिल्ली के रिसर्च स्कॉलर का चमत्कार माता भगवती विधवा साध्वी नहीं, लड़की थी। जब इसको लेकर जिज्ञासा की गई तो कार्टून प्रसारक बन्धुओं ने बताया कि इस विषय में परोपकारी पाक्षिक के अगस्त (प्रथम) २०१५ के अंक में प्रकाशित प्रा० राजेन्द्र जी जिज्ञासु का लेख दृष्टव्य है।

श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने अपने उपर्युक्त लेख में लिखा है - एक से अधिक लोगों ने यह प्रश्न पूछा है कि आपने ऋषि जीवन में माई भगवती जी को माई लिखा है। हमने और भी कई लेखों में ऐसा ही पढ़ा है, परन्तु दयानन्द सन्देश दिल्ली में किसी ने उसे लड़की लिखा है। वह हरियाणा ग्राम की थी परन्तु उस लेखक ने उसके ठिकाने का भी कुछ और ही नाम लिखा है। यथार्थ इतिहास क्या है ?हमारी विनीत विनती तो यही है कि हमने जो कुछ भी लिखा है इतिहास की प्रमाणिक सामग्री के प्रमाण देकर लिखा है। प्रकाश जैसे प्रतिष्ठित पत्र की फाईल देखकर समाचार का स्कैनिंग करवाकर दिया है। स्वामी श्रद्धानन्द जी उसे माई जी लिखते हैं। अब दिल्ली राजधानी का कोई रिसर्च स्कॉलर अपनी रिसर्च का चमत्कार दिखा दे तो उसकी मनोकामना को पूरा करने में हम क्यों बाधक बनें। माई जी विधवा साध्वी थीं। लड़की नहीं थीं।

श्री जिज्ञासु जी के उपर्युक्त लेख पर विचार किया गया। उनके द्वारा सम्पादित एवं अनूदित श्री मास्टर लक्ष्मण जी रचित महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्पूर्ण जीवनचरित्र के दोनों भागों में उनके द्वारा दिए गए माता भगवती विषयक विवरण भी पढ़ें। इनसे यह तो स्पष्टतया ज्ञात नहीं होता है कि माता भगवती जी विधवा साध्वी थीं। जो जिज्ञासु जी ने स्वयं भी इस सम्पूर्ण जीवनचरित्र में कहीं पर ऐसा विधान नहीं किया है कि वे विधवा साध्वी थीं। प्रकाश पत्र की स्कैनिंग करवाकर दी गई सामग्री में भी इस बात का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया कि वे विधवा थीं।

अतः फैसबुक पर कार्टून प्रसारित करने वाले आर्य बन्धुओं से पूछा गया कि - अभी - अभी फैसबुक पर आपने इस नवीन बात का संकेत दिया है कि माई भगवती विधवा साध्वी थीं। आपसे निवेदन है कि कृपया माई भगवती विषयक अपनी इस नई जानकारी के सन्दर्भ (स्रोत) विषयक जानकारी प्रदान करें कि जिससे सभी आर्यो को आगे प्रामाणिक लेखन करने में सहायता मिले। उन बन्धुओं से यह भी प्रश्न किया गया कि - क्या आप यह समझते हैं कि प्रकाश पत्र की स्कैनिंग कर दी गई सामग्री में यह कहा गया है कि माई भगवती जी विधवा थी ?

उन बन्धुओं ने उत्तर दिया कि - यह लेख परोपकारी पत्रिका का ही है। आर्य मंतव्य ने नहीं लिखा है। लेखक (अर्थात् श्री जिज्ञासु जी) ने रिफरेन्स दिया है। आपको उस पर शंका है तो आप उन्हें लिख सकते हैं। अस्तु।

माई भगवती जी विषयक तथ्य -

फिर हमने माई भगवती जी विषयक निम्नलिखित तथ्यों को संकलित कर प्रकाशित करना उचित समझा -

महर्षि दयानन्द के कई जीवनचरित्रों में माई भगवती के बारे में उल्लेख तो पाया जाता है, किन्तु अति संक्षेप में। पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक ने रामलाल कपूर ट्रस्ट से कई वर्ष पूर्व प्रकाशित ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन ग्रन्थ में माई भगवती के सम्बन्ध में अपनी विद्वत्तापूर्ण टिप्पणियां दी हैं और उन्होंने यह भी निश्चित किया है कि ऋषि की मुम्बई की अन्तिम यात्रा (१८८१-८२ ई०) के समय माई भगवती की ऋषि से भेंट हुई थी। वह विधवा थी - इस बात का मीमांसक जी ने कोई उल्लेख नहीं किया है। श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने भी ऋषि के जीवनचरित में माई भगवती के बारे में केवल ५-६ पंक्तियां ही लिखी हैं। उन्होंने लिखा है - "हरियाना की एक महिला माई भगवती तरूणावस्था में ही वैराग्यवती हो गई थी। वह विधवा थी - इस बात का देवेन्द्रनाथ जी ने भी कोई उल्लेख नहीं किया है। पण्डित लेखराम संगृहीत ऋषि के जीवन चरित में माई भगवती का उल्लेख पढ़ने को नहीं मिलता है। मास्टर लक्ष्मण जी आर्योपदेशक रचित ऋषि के सम्पूर्ण जीवनचरित्र (जो अभी २-३ वर्ष पूर्व ही २०१२-१३ ई० में प्रकाशित हुआ है) में उसके अनुवादक व सम्पादक श्री प्रा० राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने माई भगवती के सम्बन्ध में २-३ पृष्ठ का विवरण लिखा है, मगर वे विधवा थीं। इस बात का तो उसमें भी कोई उल्लेख नहीं है। अभी-अभी परोपकारी पत्रिका के अगस्त (द्वितीय) २०१५ के अंक में श्री इन्द्रजित् देव जी का कोई भगवती विषयक एक उत्तम लेख छपा है। उसमें भी वे विधवा थीं। - इस बात का उल्लेख नहीं है।

ध्यातव्य है कि १९८६ ई० में एक प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्रिका में प्रकाशित एक संशोधनात्मक लेख में एक प्रसिद्ध लेखिका ने १९०२ ई० में प्रकाशित सामग्री के आधार पर यह लिखा था कि - माई भगवती का बाल विवाह हुआ था। उस लेख में यह भी लिखा गया था कि २६ वर्ष की भगवती श्रशुर छोड़ अपने घर हरयाणा वापिस आ गई थी। मगर उस लेख में यह नहीं लिखा गया था कि वे विधवा थीं।

प्रमाणों की अपेक्षा -

अतः आदरणीय श्री प्रा० राजेन्द्र जी जिज्ञासु से निवेदन है कि जिस बात का संकेत दिया गया है कि- माई भगवती जी विधवा थीं। इसके एक-दो ठोस प्रमाण उपलब्ध हैं तो कृपया अपनी अनुकूलता से सार्वजनिक करें कि जिससे सभी आर्यो को इस विषय में सही जानकारी मिल सके एवं आगे प्रामाणिक लेखन करने में सहायता प्राप्त हो।

परोपकारी के नवम्बर (प्रथम) २०१५ अंक में श्री जिज्ञासु जी ने पुनः इस विषय को लेकर अनेक बातें लिखी हैं, मगर इन बातों से भी यह स्पष्ट सिद्ध नहीं होता है कि माई भगवती विधवा साध्वी थीं। श्री जिज्ञासु जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के आरम्भिक काल के साहित्य में इस बात का प्रमाण होने की बात लिखी है। उस दिशा में प्रयास अपेक्षित है कि जिससे वास्तविक तथ्य की गवेषणा हो सके। इसी बात का प्रमाण जानने की जिज्ञासा को श्री जिज्ञासु जी ने परोपकारी में प्रकाशित अपने लेख में मेरी हठ के रूप में व्यक्त किया ओर इसे कहा लिखा है - की रट लगाना लिखा। क्या यही है लेखन शैली का सौन्दर्य ?

-८/१७, टाउनशिप पो. नर्मदानगर जिला-भरूच, गुजरात

वेद प्रचार के लिए समर्पित व्यक्ति

प्र0 ओम प्रकाश जी वर्मा

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

आर्य जगत् के उज्ज्वल नक्षत्र - मधुरवाणी के सरस गायक- संगीत कला मर्मज्ञ - ओजस्वीवक्ता -सफल वेद प्रचारक वेद प्रचार के लिए समर्पित व्यक्तित्व - आँखों में आकर्षण - मन में अपूर्व उत्साह - मध्यम शरीर सुन्दर सुडौल मुख मण्डल तथा उपनेत्रों से सुसज्जित - श्वेत वस्त्र धारणकर जब मंच पर आप बैठते थे तो हंस की तरह शोभायमान होते थे आपको सहसा देखकर लोग प्रभावित होते थे आपका युवावस्था में देबाहुआ लावण्ययुक्त मुखमण्डल आज भी स्मरण आता है पं. ओमप्रकाश जी वर्मा पंजाब प्रान्त से आया करते थे उस समय हरयाणा नहीं बना था यमुनानगर के पास शादीपुर ग्राम आपका निवास स्थान है उसी की प्रसिद्धि पूरे देश में है मुझे बचपन की घटनायें सभी आज भी स्मरण हैं जैसे अभी घट रही हो गुरूकुल ततारपुर की स्थापना के पश्चात् जो सम्मेलन प्रथम वार्षिक सम्मेलन के रूप में था उसके साथ-साथ आस-पास के ग्रामों में वेद प्रचार कार्यक्रम भी थी जो पूज्य स्वामी जी बड़ी सूझ-बूझ से कराते थे स्वामी जी भी पंजाब प्रान्त से सम्बन्धित रहे और वर्मा जी भी पंजाब सभा से ही जुड़े थे इधर पंजाब से आये कई ग्राम आज भी अपनी पुरानी भाषा की पहिचान बनाये हुए हैं उन्हें लोग पछाँ दे और पंजाबी ही कहते हैं सम्मेलन अथवा कार्यक्रम में उन्हीं की भाषा में कोई गीत गाये तो में लोग प्रसन्नता में मग्न होकर झूम जाते हैं और वही हाल वहाँ भी देखने को मिला जब वर्मा जी मस्ती में भरकर महर्षि दयानन्द सरस्वती की चर्चा करते और चर्चा में वे अमृतसर (पंजाब) की घटना सुनाकर सरदार विक्रम सिंह जी जब अपने चार घोडे की बग्गी पर चढ़ने से पहले ब्रह्मचर्य की चर्चा करते हैं कि आपने ब्रह्मचर्य की प्रशंसा की है आप भी तो ब्रह्मचारी है आप में कितनी शक्ति है? महर्षि हंसते हुए चुप रहे और जब वे बग्गी पर बैठ गए तो घोड़े आगे को नहीं चले आगे के पाँव ऊपर उठ जाते हैं एक कदम आगे नहीं चल पाते और बार-बार पीटने के बाद भी वे सरदार विक्रम सिंह पीछे की तरफ मुड़कर देखते हैं तो महर्षि दयानन्द जी ने एक हाथ से बग्गी का पहियाँ पकड़ा हुआ है वे आश्चर्य चकित हुए और शर्मिन्दा भी हुए नीचे उतरकर क्षमा याचना की और उनके अपूर्व बल की प्रशंसा की इस घटना को सुनाकर पंजाबी में गीत भी सुनाते तो ग्रामीण मस्ती में श्रद्धा से अपना मस्तक झुका लेते हुए मैंने स्वयं देखा है - गीत की पंक्तियां है -

''मस्त हाथियों दा बल आन्दाँ - ताकत आन्दीं -
भारी - जो रहन्दाँ ब्रह्मचारी।।

भजन लम्बा है और स्वामी जी के बल की पूरी घटना है इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में वर्मा जी वेद प्रचार - आर्यसमाज का प्रचार किया करते रहे हैं मैं उन्हीं दिनों से आप से परिचित हूँ और मेरे पूज्य पिता स्व० पहलवान घनत्तरसिंह जी आर्य तो इस भजन को सुनकर इनके इतने भक्त बन गए थे कि इन्हें अपने घर ले जाते दूध पिलाते हलवा खिलाते जब कभी उन्हें पता चल जाता कि हापुड़ आर्य समाज में आये हुए हैं तो सीधे खेतों से हापुड़ पहुँचकर दर्शन लाभ उठाते थे और कहते थे कि मुझे आपका ब्रह्मचारी वाला भजन समझ में आता है अब भी जब वर्मा जी कहीं भी मिलते है पिता जी की इस आत्मीयता को जरूर याद दिलाकर उन संस्कारों को जागृत करके मुझे प्रेरणा एवं आशीर्वाद प्रदान करते रहते हैं मैं वर्ष १९६५ से आज ५० वर्षो के बाद भी आपको वैसा ही सम्मान देता हूँ आप कहते हैं कि अब तो आप सन्यासी हो गए हो मेरे से आगे निकल गए हम तो अभी वहीं पड़े है मैं कहता हूँ पुत्र कभी पिता से आगे नहीं निकलता और यदि आप ऐसा अनुभव करते हो तो भी आपकी ही तो विजय है- ''पुत्रात् इच्छेत् पराजयम्'' ऐसा लिखा है अतः पुत्र सम्मान करे और पिता प्रसन्नता से आया आशीर्वाद देव तभी कल्याण सम्भव है। वर्मा जी ने आर्य समाज की जो सेवा की है वह एक स्वार्णिम अध्याय है। लाहौर को केन्द्र बनाकर कलकत्ता - मुम्बई - श्रीनगर नेपाल - हैदराबाद की दिशा में बंगलौर पूरे देश में कोई शहर नहीं बचा और छोटे-छोटे ग्रामों में भी आपका सदैव वेद प्रचार होता रहा आर्य संस्थाओं के निर्माण के लिए भी आप विशेष प्रेरणा देने में सिद्ध हस्त रहे हैं। पाणिनि कन्या गुरूकुल वाराणसी - गुरूकुल गौतम नगर दिल्ली गुरूकुल पूठ का मैं स्वयं साक्षी हूँ जब यज्ञ के पश्चात आप ईश्वर भक्ति के गीत सुनाते है वातावरण शान्त सात्विक होता है तभी अपनी किसी भी माँग को प्रस्तुत करते हैं तो वह स्वीकार हो जाता है गुरूकुल पूठ के उत्सव पर यज्ञ के बाद भजन सुनाते हुए बोले कि यहाँ गुरूकुल में छप्पर की यज्ञशाला है बताओं मेरठ की इतनी मातायें आई हुई हैं यज्ञशाला तो ये ही बना देगी सरोज आर्या साकेत आर्य समाज की प्रधाना थी खड़े होकर बोली कि सभी आर्य समाज साकेत सुन्दर यज्ञशाला बनवा देगी और करतल ध्वनि से सम्मान हुआ तथा यज्ञशाला बन गई ऐसे ही गुरूकुल गौतम नगर - गुरूकुल पौन्धा देहरादून वहां भी किसी एक बात के लिए अपील की और वह पूरी हो जाती रही है यह इनकी वाणी का जादू कहा जायेगा आपके गीत बड़े प्रभावशाली होते हैं। एक स्थान पर मन्त्री जी ने कहा कि वर्मा जी बिना बोले भजन गायेगे अर्थात बिना भाषण दिये मात्र गीत ही गायें यह कैसे सम्भव था भूमिका बनाकर जब गीत गाया जाता है तभी प्रभावशाली होता है तो आपने बाजा बजाकर केवल इशारे करते रहे अभिनय से लोगों के समझ में कुछ नही आ रहा था तब मन्त्री जी ने क्षमा याचना की कि महाराज आप मुख से अपनी मधुर वाणी प्रचार करो ऐसे अद्भुत कलाकार हैं आदरणीय ओम प्रकाश जी वर्मा। आपने पुराने समय के सभी सन्यासी विद्वान उपदेशक देखे हैं और उनका सान्निध्य भी प्राप्त किया उनके साथ वेदप्रचार भी किया है आप जब पुराने संस्मरण सुनाते हैं तो भावुकता जागृत हो जाती है। आपने सदैव भारतीय परम्परा एवं महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज का प्रचार-प्रसार किया है। कभी अंग्रेजी गीतों की तर्जो पर गीत नहीं गाये साहित्यिक संगीत के आधार पर आपके गीतों ने प्रसिद्धि प्राप्त की है। राग और रागिणी पीछे छोड़कर ईशभक्ति में कविवर प्रकाशजी अजमेर के गीतों को झूम-झूमकर गाया करते थे।

मैय्या बरस-बरस रसवारी - मैय्या .....
तू बरसे मैं जीभर नहाऊँ ऐसी क्या बात बिगारी मैय्या ....

समाज को स्वस्थ और सुन्दर बनाने के लिए
हम यही चाहते आज - हम यहीं चाहते आज।।

समाज से राष्ट्र सुदृढ़ करने का सपना पूरा करना चाहते है, आप करूणा के सागर है - दयाके भण्डार हैं गुणों के आगार हैं गुरूकुल गौतमनगर के प्रत्येक यज्ञ में अनिवार्य आते है और गुरूकुल पौन्धा भी प्रतिवर्ष जाते हैं वहां पर आपने एक अतिथि कक्ष का भी निर्माण दान देकर कराया है। पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी से आपका विशेष आत्मीय स्नेह है। हम सभी कुलवासी आपको-पिता और दादा तुल्य मानकर सम्मान देते रहे है और आशीर्वाद पाते रहे हैं। आपके अनुभवों से लाभ उठाते हैं आपकी स्वास्थ्य अब कमजोर हो गया है लेकिन मजबूत इरादों से तथा मन-बुद्धि की शक्ति से सभी कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर ली है। परिवार से मोह बन्धन मुक्त हो गए हैं अब प्रभु उपासना में अधिक समय लगाते हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि आप शीघ्र सुन्दर स्वास्थ्य प्राप्त कर पुराने परिचित संगीत से आर्य समाज के प्रचार द्वारा समाज सुधार कार्य करने में सक्षम हो और हम सभी को अपना शुभ आशीर्वाद देते रहें ?

भूयश्च शरदः शतात् की कामना के साथ ही आपके मंगलमय जीवन के लिए दीर्घायु की कामना करते है।

स्वस्ति यज्ञ

१. जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हापुड़ के मंत्री अशोक आर्य पिलखुवा अन्तरम उ०प्र० सभा ने अपनी विवाह की रजत जयन्ती पर स्वस्ति यज्ञ का आयोजन कर सत्संग का लाभ देते हुए वैदिक परम्परा को प्रचारित किया यज्ञ स्वामी अखिलानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ ने किया।

२. आर्यसमाज स्याना के प्रधान नरेन्द्र आर्य एवं माता सुदेश आर्या ने अपने पौत्र के जन्मदिवस पर चतुर्वेद शतक की आयोजन किया शिवकुमार शास्त्री एवं प्रमोद आचार्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया।

३. कन्या डिग्री कालेज पिलखुवा में संस्कार प्रशिक्षण एवं योग प्रशिक्षण शिविर के रूप में सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ ने २१-२२-२३ जनवरी को प्रशिक्षण प्रदान कर योग के प्रति संकल्प दिलाया और स्वस्थ रहने के नियम बताये। अशोक आर्य एवं कालेज की प्रबन्ध समिति को बहुत-बहुत बधाईयां।

४. स्याना के ग्राम सैंगरपुर में महावीर सिंह चौहान के घर पर स्वस्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने घर जाकर आशीर्वाद प्रदान किया।

५. आर्यसमाज ततारपुर का मासिक यज्ञ एवं सत्संग डा० ओमवीर सिंह के बड़े भ्राता फौजी महावीर सिंह के घर पर सम्पन्न हुआ पूरे ग्राम के आर्यो ने सत्संग में भाग्य लिया स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री में यज्ञ में सम्मिलित हुए

६. आर्यसमाज सीतादेई लालपुर हापुड़ का मासिक सत्संग एवं यज्ञ प्रदीप आर्य सुपुत्र म० आशाराम आर्य भजनोपदेशक के घर पर सम्पन्न हुआ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभामंत्री ने परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया।

७. सर्वेभवन्तु सुखिनः ट्रस्ट एवं आर्यसमाज वसुन्धरा - गजियाबाद में यजुर्वेद परायण यज्ञ सम्पन्न हुआ गुरूकुल च्योंटीपुरा की ब्रह्मचारिणियों ने वेदपाठ किया सोमदेव आचार्य ब्रह्म रहे कुलदीप आर्य बिजनौर के भजन हुए स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने आशीर्वाद प्रदान किया। जितेन्द्र भाटिया - वेदप्रकाश आर्य - चौहान जी अग्रवाल जी का विशेष सहयोग रहा। पूरे क्षेत्र में इस प्रचार से विशेष जागृति पैदा हुई।

महर्षि दयानन्द का प्रो. मैक्समूलर पर चमत्कारिक प्रभाव

मनमोहन कुमार आर्य,
देहरादून।

प्रोफसेर मैक्समूल जर्मनी में जन्में इंग्लैण्ड के निवासी और संस्कृत के जानकार विद्वान थे। अंग्रेजों ने भारत में अपने ब्रिटिश राज्य व ईसाईयत की गहरी जड़े जमाने के लिए उनका उपयोग किया था। उन्हें आर्थिक प्रलोभन व सहायता का प्रस्ताव किया गया था जब कि उन्हें इसकी अत्यन्त आवश्यकता थी। वह ईसाई मत के अनुयायी थे अतः ईसाईयत की सेवा करना उनका कर्तव्य कहा जा सकता है। अतः विवशता और अपने मत की सेवा के लिए उन्हें वेदों के मिथ्या व विद्रूप अर्थ करने का कार्य करना पड़ा। उन्होंने यह कार्य इसलिए भी किया था क्योंकि वह कोई बहुत बड़े वैदिक विद्वान, ऋषि व योगी नहीं थे। जो अपनी आत्मा व सत्य के विरूद्ध आचरण नहीं करता। उनकी दूसरी विवशता आर्थिक थी। अतः उन्होंने भारत में शासन कर रहे अंग्रेजों का प्रस्ताव स्वीकार कर उसे पूरा किया। अपने इसी कार्य के अन्तर्गत उन्होंने जहां आक्सफोर्ड में कार्यरत रहते हुए भारत आने वाले अंग्रेज अधिकारियों को भारत के प्राचीन धर्म व संस्कृति के विरोधी व्याख्यान दिये वहीं चारों वेदों का अंग्रेजी में आप्रमाणिक भ्रान्तिपूर्ण भाष्य व अनुवाद कर उसे सरकारी सहायता से प्रकाशित कराया था।

प्रो. मैक्समूलर पर महर्षि दयानन्द के विचारों का प्रभाव उनकी चार वेदों की भूमिका के रूप में लिखे गये प्रसिद्ध ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' के द्वारा हुआ। यह ग्रन्थ मासिक रूप से क्रमानुसार प्रकाशित होता था जिसे मैक्समूलर के इंग्लैण्ड के पते पर भेजा जाता था। महर्षि दयानन्द द्वारा इस ग्रन्थ का प्रणयन अगस्त, १८७६ में आरम्भ किया गया था। वैदिक विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती अपनी भूमिका भास्कर ग्रन्थ के परिशिष्ट में लिखते हैं कि यद्यपि मैक्समूलर प्रत्यक्षतः भारत में नहीं आ सके, परन्तु अपने जीवन के अन्तिम वर्षो में वे भारत व भारतीयता के प्रशंसक रहे। यह उनके 'India : What can it teach us?' भारत से हम क्या सीखें, में व्यक्त विचारों से स्पष्ट है। आक्सफोर्ड में रहते हुए अपने प्रारम्भिक वर्षो में उनके लिए अपने अन्नदाताओं को सन्तुष्ट रखना आवश्यक था। इसलिए उस अवधि में उन्होंने जो कुछ लिखा वह उनकी उस समय की स्थिति का परिणाम था। बाद में उनके विचारों में जो परिवर्तन आया, उसके दो कारण थे -

१. अपनी अन्तरात्मा का विद्रोह - प्रो० मैक्समूलर की आर्थिक विपन्नता के कारण अपनी आत्मा का सौदा करके लार्ड मैकाले की दासता स्वीकार करने को बाध्य होना पड़ा था। इस आत्म समर्पण के कारण उसकी आत्मा उसे सदा कचोटती रही। इसलिए जैसे ही उसे इस स्थिति से उबरने का अवसर मिला, वैसे ही उसका मन विद्रोह कर उठा और भीतर की बातें बाहर आने लगी।

२. ऋषि दयानन्द की मान्यताओं से परिचय- मैक्समूलर ने लिखा है ''भारतीय वांग्मय की प्राचीनतम कृति ऋग्वेद के दो संस्करण मासिक रूप में प्रकाशित हो रहे हैं - एक बम्बई से और दूसरा प्रयाग (इलाहाबाद) से। पहले में मूल संस्कृत टीका तथा उसका मराठी और अंग्रेजी में अनुवाद रहता है और दूसरे में संस्कृत में विस्तृत व्याख्या तथा हिन्दी में उसका अनुवाद रहता है। ये ग्रन्थ ग्राहकों के चन्दे से प्रकाशित हो रहे हैं। ग्राहकों की संख्या पर्याप्त है।''

(Of the Rigveda, the most ancient of Sanskrit books, two editions are now coming out in monthly numbers. The one published at Bombay by what may be called the liberal party. The other at Prayag (Allahabad) by Dayanand Saraswati, the representative of India orthodoxy. The former gives a paraphrase in Sanskrit and Marathi and English translation, the latter a full explanation in Sanskrit, followed by a vernacular (Hindi) commentary. These books are published by subscription and the list of subscribers among the natives of India is very considerable-India : What can it teach us)

प्रोफेसर मैक्समूलर स्वामी दयानन्द द्वारा प्रयाग से मासिक रूप में प्रकाशित हो रहे ऋग्वेदभाष्य के नियमित ग्राहक थे और उनका नाम मुखपृष्ठ पर प्रकाशित ग्राहकों की सूची में शामिल था। स्वामी जी कृत ऋग्वेदभाष्य को पढ़कर मैक्समूलर की आंखे खुली और उसके विचार पलटा खाने लगे। सन् १८८२ में कैम्ब्रिज में मैक्समूलर के कुछ व्याख्यान हुए जो सन् १८८३ में 'India : What can it teach us?' नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। इन व्याख्यानों में स्वामी दयानन्द, वेद और भारत के सम्बन्ध में मैक्समूलर का स्वर बदला हुआ था। कभी मैक्समूलर ने स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा था। ''स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेद का संस्कृत में भाष्य किया है, पर उनके समूचे साहित्य में ऐसा कुछ नहीं है जिसे मौलिक कहा जा सके, सिवा इसके कि उन्होंने वैदिक शब्दों और वाक्यों के कुछ विचित्र अर्थ किये हैं। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पढ़ने के बाद मैक्समूलर ने इस महान ग्रन्थ को संस्कृत साहित्य के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हुए स्वामी दयानन्द और उनकी कृति का इन शब्दों में स्तवन किया- सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य को हम ऋग्वेद से आरम्भ करके दयानन्द की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तक दो भागों में बांट सकते हैं। (We may divide the whole of Sanskrit literature, beginning with the Rigveda and ending with Dayananda's Introduction to his commentary of the Rigveda, into two parts. - India : What can it teach us, P. 102) इस प्रकार मैक्समूलर ने जहां संस्कृत साहित्य के एक ध्रुव पर ऋग्वेद को रक्खा वहां दूसरे ध्रुव पर दयानन्द की ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को प्रतिष्ठत किया।

सन् १८६६ में मैक्समूलर ने 'चिप्स फ्राम ए जर्मन वर्कशाप' संस्करण १८६६, पृष्ठ २७ पर प्रकाशित किया था - ''वैदिक सूक्तों की एक बहुत बड़ी संख्या बिल्कुल बचकानी, जटिल, निकृष्ट और साधारण है। उनमें न परस्पर संगति है और न सुलझे हुए अर्थो की स्थापना। वेद धार्मिक विश्वासों के विजड़ित पोथे हैं जिनका अधिकांश भाग बुद्धिगम्य नहीं है। मानवजाति के सीखतड़ बच्चे जिस आश्चर्य से जगत को देखते हैं, उसी की छाया मन्त्रों में है।'' उन्हीं मैक्समूलर ने सन् १८८२ में लिखा - वेद में जैसी भाषा पाई जाती है, उसमें जैसा जीवन दर्शन है और जैसे धर्म का वर्णन होता है, उनमें जो दृश्यावली दृष्टिगत होती है, वर्षो में तो कोई उसकी दूरी नाप नहीं सकता। वेद में ऐसी भावनाओं का प्रकाश हुआ है जो हम यूरोपियनों को उन्नीसवीं शती में आधुनिक प्रतीत होती है। उससे अधिक प्राचीन साहित्यिक कृति का हमें नाम भी सुनने को नहीं मिला। मानव विचारधारा के इतिहास के विषय में जो महत्वपूर्ण जानकारी हमें वेद से मिलती है वह वेदों की खोज से पूर्व हमारी कल्पना से भी परे थी।'' (हम भारत से क्या सीख सकते हैं?पृष्ठ १३०)

सन् १८६८ में मैक्समूलर ने अपने पुत्र को लिखे पत्र में वेदों का इन तिरस्कारपूर्ण शब्दों में अवमूल्यन किया था - ''संसार की सब पुस्तकों में नया अहदनामा (Bible or New Testament) सर्वोत्कृष्ट है। इसके पश्चात कुरान को, जो एक प्रकार से बाइबल का रूपान्तर है, रक्खा जा सकता है। तत्पश्चात् पुराना अहदनामा (Old Testament) बौद्ध त्रिपिटक, वेद और अवेस्ता है। बाद में सन् १८८३ में मैक्समूलर ने इन शब्दों में वेद का प्रशस्तिगत किया- ''यदि हम उस स्रोत को जानना चाहते हैं जो मनुष्य के चरित्र का निर्माता है, विचारों का प्रेरक एवं, कार्यो का नियन्ता है, जो भारत के निम्नतम वर्गीय से लेकर उच्चतम वर्गीय व्यक्ति को प्रभावित एवं अनुप्राणित करता है तो हमें भारतीयों के धर्म से परिचित होना चाहिए जिसकी भित्ती वेद की आधारशिला पर है। सन्दर्भ हम भारत से क्या सीख सकते हैं, पृष्ठ २२८

यदि किसी को मानव जाति का अध्ययन करना हो, या आप चाहें तो यूं कह सकते हैं कि यदि किसी को आर्य जीवन के विषय में अध्ययन करना हो तो उसके लिए वैदिक साहित्य का अध्ययन ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगा। संसार का कोई भी साहित्य इस क्षेत्र में वैदिक साहित्य की तुलना में ठहर नहीं सकता। वही, पृष्ठ १२४

भारतीयों के इतिहास, धर्म, दर्शन, कानून इत्यादि को समझने के लिए, यह अनिवार्य है कि उनका अध्ययन वेद से हो। बिना वेद के आधार के हिन्दू धर्म का पूर्ण ज्ञान असम्भव है। (No one will ever understand the religious, philosophical, legal and social opinions of the Hindus who is unable to trace them back to their true sources in the Vedas - India 126)

लोगों ने वेद की महत्ता को कम करने के प्रयत्न कम नहीं किये, पर उसका महत्व आज भी वैसा ही है। आज भी धार्मिक, सामाजिक या दार्शनिक विवादों में वेद को ही अन्तिम प्रमाण माना जाात है। - वही, २२७

इसी सन्दर्भ में संस्कृत की महत्ता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा- संस्कृत साहित्य में ऐसा क्या मिलेगा जो विश्व के अन्य साहित्यों में नहीं मिलता। इस प्रश्न के उत्तर में मेरा कथन है कि संस्कृत साहित्य में हमें वास्तविक आर्य के दर्शन होते हैं। इन आर्यो को हम यूनानी, ईरानी, रोमन, जर्मन, कैल्ट तथा स्लाव लोगों के रूपों में देख चुके हैं। परन्तु जिस आर्य का पता हमें संस्कृत साहित्य में मिलता है, उसका व्यक्तित्व इन सबसे निराला है। - वही, १०८

लेख की सीमा को देखते हुए हम अनेकों महत्वपूर्ण उद्धरणों को छोड़ते हुए केवल एक उद्धरण प्रस्तुत कर रहे हैं इन पंक्तियों में प्रो. मैक्समूलर ने जो लिखा है उसके लिए उनके हाथों को चूमने की इच्छा होती है। वह लिखते हैं

शेष पृष्ठ.....५

ओम का विवेचन

डॉ० महेश कुमार शर्मा

ओ३म् यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है। यह अ, उ और म् तीन अक्षरों के समुदाय अर्थात् अकार, उकार और मकार से मिलकर बना है। इस ओ३म् नाम से परमेश्वर के बहुत से नाम आते हैं जैसे अकार से विराट् अग्नि और विश्व आदि उकार से हिरण्यगर्म, वायु और तैजस आदि और मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञ आदि।

महर्षि पाणिनि जी के अपटाध्यायी के अनुसार ओ३म् शब्द में अ (पूर्व पद, वर्ण, ह्रस्व स्वर) तथा उ (उत्तर पद, वर्ण, ह्रस्व स्वर) गुण सन्धि के फलस्वरूप संयुक्त होकर ओ (फलित पद, वर्ण, दीर्घ स्वर) बनाते हैं। यहां वृद्धि सन्धि नहीं होती है। ओ तथा म् के मध्य ३ का अंक प्लुत स्वर अर्थात् तीन मात्रा का सूचक है।

ओ३म् शब्द की महिमा का बखान वेदों, उपवेदों, शास्त्रों, उपनिषदों, ब्राह्मण, आरण्यक व प्रातिशास्त्र ग्रंथों, दर्शनों, स्मृतियों, योग व सूत्र ग्रंथों, तंत्र शास्त्रों, पुराणों, रामायण, महाभारत, गीता आदि धार्मिक ग्रन्थों में जगह-जगह पर किया गया है। यहां तक कि कुरआन शरीफ बाईबिल गुरू ग्रन्थ साहिब में और जैन, बौद्ध यहूदी, पारसी, साबिई आदि धर्मो के ग्रंथों में ओम् सर्वत्र मिलता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने पंचमहायज्ञ विधि, संस्कारविधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, सत्यार्थ प्रकाश व अन्य ग्रन्थों में ओ३म् शब्द को वेदों व अन्य ग्रन्थों से टुहकर सार रूप में स्पष्ट किया है जो अद्वितीय, अनुपम और अद्‌भुत है। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में परमेश्वर के सौ से भी अधिक नामों की व्याख्या करते हुए, अपनी तार्किक बुद्धि और अकाट्य प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि परमात्मा का निज नाम ओ३म् ही है। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में उपासना विषय के अन्तर्गत महर्षि ने लिखा है कि जो ईश्वर का ओ३म् ओंकार नाम है, सो पिता-पुत्र के सम्बन्ध में समान है।

परमात्मा का निज नाम ओ३म् बहुत छोटा है, परन्तु अर्थो की दृष्टि से यह सबसे बड़ा है, इसके अर्थ अनन्त हैं। ओ३म् में ही सारा ब्रह्मण्ड समाया हुआ है। माण्डूक्य उपनिषद् में इस ओ३म् शब्द की विस्तार और पूर्ण रूप से टीका की गई है। ओ३म् या ओंकार को छांदोग्य तथा कथा उपनिषदों में अकणार या एककणार के रूप में भी कहा गया है, परन्तु अब ये नाम प्रचलित नहीं हैं।

देवनागरी लिपि में ओ३म् को ॐ के रूप में लिखा जाता है भिन्न-भिन्न लिपियों जैसे तमिल, बंगला, जैन, तिब्बती, चीनी, गुरूमुखी आदि लिपियों में ओ३म् (ॐ) को विभिन्न स्वरूपों में लिखा जाता है। ब्राह्मी लिपि में स्वस्तिक चिह्, ओ३म् का ही प्रतिरूप है। सभी हिन्दू कलाओं में, धार्मिक स्थानों में, मांगलिक कार्यो और शुभ अवसरों पर, सारे भारत और नेपाल में ओ३म् (ॐ) एक पवित्र बोध चिन्ह के रूप में सर्वत्र लिखा हुआ मिलता है। हिन्दू धर्म में कुछ मत-मतान्तरों के अनुसार ॐ चिन्ह में चन्द्र बिन्दु का अपना विशेष महत्व है। उनकी मान्यता है कि चन्द्रमा का आकार चन्द्रवंशी योगिराज श्री कृष्ण जी का प्रतीक है और बिन्दु, सूर्य, सूर्यवंशी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जी का द्योतक है। इस्लाम धर्म और मुस्लिम देशों में चांद-तारा एक पवित्र चिन्ह है जो उनकी मस्जिदों , उनके देशों के झंडों आदि में लिखा हुआ मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि यह चांद-तारा, ॐ के चन्द्र बिन्दु से ही लिया गया है।

ओ३म् शब्द 'आप्लृ' व्याप्तौ और 'अव्' रक्षणे दोनों धातुओं से सिद्ध होता है। 'आप्लृ' धातु से निर्मित ओ३म् का अर्थ सर्वव्यापी होता है और 'अव्' धातु से निर्मित ओ३म् का अर्थ संसार सागर से रक्षा करने वाला होता है, वह परमात्मा हमारी रक्षा करता है। धातु पाठ में जितने अधिक अर्थ 'अव्' धातु के हैं, उतने किसी अन्य धातु के नहीं हैं।

ओम् (ओंकार) शब्द का संस्कृत नाम 'प्रणव' है। योगिराज पंतजलि अपने योगशास्त्र में कहते हैं - '' तस्य वाचकः प्रणवः। (योग सूत्रः १.२७), अर्थात् उस ईश्वर का नाम 'प्रणव' है। इसकी उत्पत्ति 'नू' धातु से हुई है, अर्थ है, चिल्लाना, ध्वनि के साथ स्तुति करना। ब्राह्मण ग्रंथों, छान्दोग्य उपनिषद तथा स्रोत सूत्रों के अनुसार प्रनू व ओ३म् के उच्चारण के समय, ओ को प्लुत स्वर में बोलकर मधुमक्खी के समान मिनमिनाहट की तरह मन्द ध्वनि निकालनी चाहिए या भ्रमर के रामान गुंजन करते हुए नाद अनुस्वर ध्वनि निकालनी चाहिए। गीता में कहा गया है- ''प्रणवः सर्ववेदेषु।'' (गीता : ७.८), अर्थात् सम्पूर्ण वेदों में सार प्रणव (ओंकार) ही है।

ओ३म् का पर्यायवाची शब्द 'उद्‌गीथ' है, इसका अर्थ है, जो गाया जाये। छांदोग्य उपनिषद् में कहा गया है -

''ओमिति हि एतदक्षरमुद्‌गीथ मुपासीत।

ओमित्युद्‌गायति, तस्योपाख्यानम्।। (छान्दो : १.१.१)

अर्थात - उद्‌गीथ ही प्रणव है, वही ओ३म् है। ओ३म् अक्षर को ही उद्‌गीथ समझकर मनुष्य उपासना करे। उद्‌गीथ आकाश की तरह अनन्त है।

वैदिक धर्म में समस्त सृष्टि निर्माण का आधार त्रैतवाद माना गया है। त्रैतवाद के अनुसार तीन पदार्थ ईश्वर, जीव और प्रकृति अनादि हैं और ओ३म् शब्द में तीन अक्षर अ, उ और म् ज्ञान देते हैं कि यह जगत् तीन तत्वों ईश्वर, जीव और प्रकृति से विभूषित है। ईश्वर (ब्रह्म) सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वत्र आदि है, जीव चेतन है और प्रकृति जड़ है। प्रकृति सत् स्वरूप है, जीव सत् व चित् है और ईश्वर सत्, चित् और आनन्द स्वरूप है। जिस प्रकार 'अ', 'उ' और म् के मिलाय से ओम बना है, इसी प्रकार ईश्वर, जीव और प्रकृति से इस अनन्त संसार की रचना हुई है।

महर्षि दयानन्द जी ने संसार विधि के अन्तर्गत जातकर्म संस्कार में उल्लेख किया है कि बच्चे के जन्म के बाद उसका पिता घी और मधु दोनों बराबर मात्रा में मिलाकर, सोने की शलाका से नवजात शिशु की जीभ पर ओ३म् लिखे और उसके दांये कान में 'वेदोऽसीति', तेरा गुप्त नाम वेद है, ये शब्द कहे। शिशु के दांये तथा बायें कान में नौ मंत्र, 'ओम मेधां ते देवः सविता मेधां देवी सरस्वती।' इत्यादि का, बच्चे का पिता ओंकार सहित जप करे। ओम् ही हम सबकी आत्मा और प्राणशक्ति है, यही संजीवनी औषधि है।

मनुष्य जब मरणासन्न अवस्था में होता है, तब भी ओम् के उच्चारण करने की शिक्षा यजुर्वेद में दी गई है। ओम् क्रतो स्मर। क्लिबे स्मर। कृतँ स्मर।।' (यजु ४०.१५), अर्थात हे प्राणी (मानव) तू 'ओंम' का स्मरण कर, इसी का स्मरण सुखदाई है। गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण महाराज कहते हैं -

'ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।'

यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।। (गीता : ८.१३)

अर्थात जो साधक अन्त समय में ओम् अक्षर रूप ब्रह्म का मानसिक उच्चारण और परमात्मा का चिन्तन करते हुए शरीर को त्याग कर दसवें द्वार से प्राणों को छोड़ता है, वह परमगति को प्राप्त होता है। इस प्रकार मनुष्य को अपना जीवन ओ३म् से प्रारम्भ करके, इसके स्मरण के साथ ही समाप्त करना चाहिए।

ओ३म् से स्तुति, प्रार्थना और उपासना, मनुष्य को वह जीवन-शक्ति प्रदान करती है, जो सघप्रसूता गाय का दूध उसके नवजात शिशु को देता है। यदि हम यह कहें कि सफल जीवन का आधार ओ३म् ही है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। महर्षि पतंजली ने 'ओ३म्' के जाप का विधान किया है - 'तज्जपस्तदर्थ भावनम्।' (योग सूत्र : १.२८), इस सूत्र के अनुसार परमेश्वर की वाणी ओ३म् ही है और ओ३म् का जप इसके अर्थ जानकर ही करना चाहिए। यह ओ३म् मानव की पवित्र इच्छाओं की पूर्ति करने वाला एक प्रकार का बीज है। शुद्ध मन से एकाग्र होकर उच्चारित किया गया ओ३म् अंततः मोक्षदाता और नमस्करणीय सिद्ध होता है। विभिन्न ध्वनियों और आवृत्तियों में 'ओ३म्' का एकाग्रचित्त होकर जय करने से रोगी मनुष्य बीमारियों से छुटकारा पाकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकता है।

पृष्ठ.....४ का शेष

कि यह निश्चित है कि हम सब पूर्व से ही आये हैं। इतना ही नहीं, हमारे जीवन में जो कुछ मूल्यवान् और महत्वपूर्ण है, वह सब हमें पूर्व से ही मिला है। ऐसी स्थिति में जब भी हम पूर्व की ओर जायें तब हमें यह सोचना चाहिए कि पुरानी स्मृतियों को संजोये हम अपने पुराने घर की ओर जा रहे हैं।

(We all come from the East - all that we value most has come to us from the East and by going to the East every body ought to feel that he is going to his 'old home' full of memories, if only we can read them.-P.21).

प्रो. मैक्समूलर के विचारों में भारत और वेदों के प्रति जो वैचारिक परिवर्तन आया उसका एकमात्र कारण प्रो. मैक्समूलर का महर्षि दयानन्द की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित यजुर्वेद तथा ऋग्वेद भाष्य का अध्ययन था। एक जर्मन मूल का ब्रिटिश नागरिक महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य से इतना अधिक प्रभावित हो सकता है, इसे हम दयानन्द का जादू ही कह सकते हैं जबकि भारत में जन्में नाम मात्र के शिक्षित विद्‌वान अपने व्यक्तिगत तुच्छ लाभों के लिए विदेशियों के शरणागत हो जाते हैं और उनके द्वारा सिखाये गये असत्य का ही प्रलाप करते हैं। प्रो. मैक्समूलर भारत आकर महर्षि दयानन्द के जीवन का अध्ययन कर उनका जीवन चरित्र भी लिखना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने प्रस्ताव किया था। किन्हीं कारणों से यह महत्वपूर्ण कार्य नहीं हो सका। देश में प्रचलित अन्धविश्वासों व इनसे कुछ लोगों के हित व स्वार्थो के जुड़े होने कारण महर्षि दयानन्द को वेद प्रचार, समाज सुधार, अन्धविश्वासों व सामाजिक असमानता आदि दूर करने में जो सफलता मिलनी चाहिये थी, वह न मिली। यह भी कम नहीं है कि सन् १८६३ से सन् १८८३ तक के अपने मात्र २० वर्षो के प्रचार से उन्होंने भारत में धर्म व समाज सुधार की सुदृण नींव डाली और देश को स्वतन्त्रता के मार्ग पर आरूढ़ कर, अपने रक्षितों के द्वारा विषपान द्वारा विश्वासघात से ग्रस्त होकर बिना किसी शिकायत के, संसार से चले गये। हम अनुभव करते हैं कि न केवल भारत के वैदिक मतों के अनुयायी ही अपितु विश्व के सभी मनुष्य स्वामी दयानन्द के सत्यधर्म के अन्वेषण और उसके प्रचार के लिए सदा सदा के लिए ऋणी है। ईश्वर के प्यारे, भारत माता के दुलारे वेदों वाले स्वामी दयानन्द, तेरी जय जयकार हो, शब्दों के साथ लेख को विराम देते हैं।

आतंकवाद और निदान!

प्रकाश आर्य, महू

आतंकवाद आज पूरे विश्व की समस्या बन चुका है, जहां देखो वहीं इसका कहर हो रहा है। आतंक शब्द अपने आप में किसी अप्रिय विनाशकारी भावों को स्पष्ट करता है। किसी जमाने में दैत्य अथवा राक्षस नाम से जिन्हें जाना जाता था इस युग में उसी का प्रतिबिम्ब आतंकवाद के रूप में देखा जा रहा है।

आतंकवाद जिस तेजी से विगत ८-१० साल में बढ़ा है यदि उसी गति से आगे चलता रहा तो जनजीवन मुश्किल में पड़ जावेगा, सामान्य रूप से चलने वाली जीवन पद्धति छिन्न-भिन्न होकर अनिश्चित हो जावेगी। जन सामान्य की सम्पत्ति, परिवार व जीवन अदृश्य हाथों में गिरफ्त होकर भय के साये में दबा रहेगा। यह सब क्यों ?और इससे नियन्त्रण कैसे पाया जा सकता है?इस पर आज पूरे विश्व को विचार कर इसका स्थायी हल निकालना चाहिए।

कहा गया है अपराध करने वाले से अधिक दोषी अपराध सहने वाले को बताया गया है। इस दृष्टि से हमारी भूमिका अपराध सहने वालों में है। तो प्रश्न उठता है कि क्या हम दोषी हैं?जी हां हम दोषी हैं। दोषी इसलिए हैं कि हम दब्बू, स्वार्थी, डरपोक बनकर यह सब चुपचाप सहन कर रहे हें। हमने समाज के या राष्ट्र के दर्द को कभी अपना दर्द नहीं समझा। पड़ोसी के घर में लगी आग को हमने अपनी क्षति नहीं माना। भूल गए कि कभी हम पर भी ये मुसीबत आ सकती है।

कश्मीर सनातन धर्मियों से खाली हो गया, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड में भारत की मूल विचारधारा वाले अल्पसंख्यक बन गए, केरल में यही सब हुआ। बिहार, छत्तीसगढ़, नक्सली अत्याचारों को सहन कर रहा है। हमने कब इनको गंभीरता से लिया?इसका एकमात्र कारण है राष्ट्रीय भावना का अभाव। समग्र देश और देशवासियों से हमारा वह रिश्ता नहीं है जो स्वजनों की अपनी सम्पत्ति के लिए होता है।

किसी एक स्थान पर होने वाले अत्याचार को हमने अपनी क्षति नहीं, उस क्षेत्र की क्षति माना, उसका परिणाम उन्हें भुगतने के लिए छोड़ दिया।

काश यह पूरा देश किसी एक दुर्घटना या आतंक के विरूद्ध एक आवाज में खड़ा हो जाता तो इस जहर को वहीं समाप्त कर दिया जाता।

इस गलती को मानसिक कमजोरी को जब तक पूरा देश दूर नहीं करेगा तब तक इस समस्या का स्थायी निदान नहीं हो सकता है।

दूसरा कारण हमारे अपनों से ही हमें खतरा है भाषा, प्रान्त, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रीय भावना का अभाव और निज स्वार्थ हेतु राष्ट्र में अव्यवस्था फैलाने वाली ताकतों का सहयोग। यह सब आस्तीन के सांप की तरह पल रहे हैं। चूंकि इस देश में रहते हुए ही वे इन गतिविधियों से जुड़े हैं, पता ही नहीं चल पाता कि किस पर भरोसा करें, किस पर नहीं। दोस्त और दुश्मन का अन्तर ही समझ में न आवें तो धोखा खाना तो स्वाभाविक है। क्योंकि -

ये देश कभी ना हारा, तीरों से,
तलवारों से।
हानि उठाना पड़ी सदा, घर
की दीवारों से।।

ये स्थिति सबसे खतरनाक है, बाहरी दुश्मनों से तो सामना किया जाना संभव है किन्तु जो अपने बनकर विश्वास में विष देने लगे तो क्या होगा। गालिब का शेर है -

गैरों से तमन्नाएं वफा क्या करना।
अपने वाले ही मिट्टी में मिला देते हैं।।

पठानकोट आतंकी हमले में कुछ इसी प्रकार की ध्वनि सुनाई पड़ रही है। तीसरी सबसे दुखद स्थिति इस आतंकवाद को आश्रय देने के लिए वर्तमान राजनीति भी है। येन केन प्रकारेण अपना प्रभुत्व जमाने के लिए ऐसे कुछ समाजद्रोही पक्षों को आश्रय दिया जाता है। निर्वाचन के पश्चात फिर उन्हें अपने आका का पूर्ण आशीर्वाद व संरक्षण प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त दलगत, स्वार्थ से पूर्ण राजनीति ऐसी समस्याओं के समय राष्ट्रहित न देखते हुए सत्तारूढ़ दल के विरूद्ध मोर्चा खोल देती है। राजनेता ऐसे संवेदनशील अवसर पर भी राष्ट्रहित में लिए जाने वाले निर्णयों का विरोध करना अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं। अपना राष्ट्रीय कर्तव्य भूलकर विरोध करने में ही अपनी विपक्ष की भूमिका निर्वाह करते हैं।

इससे राष्ट्र की आतंकवाद का विरोध करने, उससे निपटने की शक्ति में कमजोरी आती है देश एकजुट होकर खड़े होने के स्थान पर बट जाता है। इसका लाभ आतंकी व उनके एजेन्टों को मिलता है। आतंकवाद के खिलाफ उठाए जाने वाले कड़े कदमों का तथा कुछ संदिग्ध सूत्रों पर कड़ाई जब की जाती है तब पार्टी या साम्प्रदायिकता का राग अलापा जाने लगता है। इस प्रकार प्रशासन के कार्यो में अवरोध उत्पन्न किया जाता है।

शासन की भी कुछ कमजोरी है शासन दुष्टों के साथ और सज्जनों के साथ समान व्यवहार करके संभावित जन विरोध से बचना चाहता है। जबकि असामाजिक व राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को शक्ति के साथ कुचल देना चाहिए।

कहा गया, इन तीन की सफलता इसी में निहित है, महिला में हो शरम, व्यापारी हो नरम और प्रशासन हो गरम।

किन्तु स्थिति ऐसी नहीं है। बड़े से बड़े अपराधी भी जेलों में पूर्ण सुख सुविधा प्राप्त कर लेते हैं। राजनीतिक संरक्षण में दण्ड के स्थान पर राहत प्राप्त कर लेते हैं सरकार व प्रशासनिक ढांचे की इस नीति से अपराधी बेखौप हो गए और जन सामान्य उनके इन कारनामों से भयग्रस्त हो गए। शासन की नीति सज्जनों को संवरक्षण सहयोग और दुष्टों के प्रति कठोर से कठोर दण्ड की होना चाहिए। तभी यह राष्ट्र अवांछित गतिविधियां और आतंकवाद नक्सलवाद जैसी गंभीर समस्याओं से मुक्त हो सकता है। इसलिए कहा गया, वैदिक संस्कृति का आदर्श है -

शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्रचर्चा प्रवर्त्तते। शास्त्रों से ही राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है।

भीष्म पितामह कहते हैं-

अग्रत चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धुनः।
इदं शास्त्रमिदं शस्त्रं शापादपि शरादपि।। - महाभारत

पहले शास्त्र, फिर शस्त्र। पहले प्यार, फिर तलवार। पहले वार्ता - ध्यान, फिर शर-सन्धान।

इस प्रकार इस आतंकवाद या राष्ट्रीय शत्रुओं के विरोध में प्रत्येक नागरिक, प्रशासन व राजनेताओं को अपने राष्ट्रीय धर्म का ईमानदारी से पालन कर एक स्वर में एक साथ इसके विरोध में खड़े होना चाहिए तभी इसका अन्त संभव है।

धन्य

धन्य वे मनुष्य हैं जो अनित्य शरीर और सुख-दुःख आदि के व्यवहार में वर्तमान होकर नित्यधर्मी का त्याग कभी नहीं करते। - संस्कारविधि :, गृहाश्रमप्रकरणमे धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान लेकर जब तक विद्या पूरी न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीयसमुल्लास वह कुल धन्य, वह सन्तान बड़ा भाग्यवान, जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। सत्यार्थ प्रकाश, द्वितीय समुल्लास

वसन्त ऋतु का सम्बन्ध शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन से है।

ऋतुराज वसन्त के स्वागत की प्रकृति अपना रूप संवार रहीहै न केवल भौतिक जगत में ही बसन्त की चेतना परिलक्षित हो रही है, मानव जगत की भी वसन्ती बहार बहने लगती है। शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों का इस ऋतु के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है हम सब अपने जीवन में इस बात को अनुभव करते रहे हैं लेकिन प्रकृति के वास्तविक परिवर्तन का हमारे मानसिक जगत पर क्षणिक नहीं स्थायी प्रभाव पड़ना चाहिये। आज हमारे समाज और राष्ट्र में एक नवीन परिवर्तन बदलाव की आवश्यकता है भारत अपनी जनता के जीवन की वसन्तोल्लास के लिए प्रयत्नशील है भारत प्रबुद्ध मस्तिष्क राष्ट्रीय वसन्त के लिए पूर्ण सचेष्ट और प्रबुद्ध है। वसन्त ऋतु के आकर्षण में एक खतरा भी है। बसन्त विलासिता का साथी है जिसका परिणाम परिज्ञय ही होता है। भारत में किसी दिन बसन्त था परन्तु हम वसन्त की विलासिता में ऐसे जकड़े कि आज तक उठकरठीकसे नहीं बैठ सके। भौतिक वसन्त के साथ आत्मिक वसन्त का समन्वय ही वसन्तागमन का सन्देश है। इस सुहानी वसन्त ऋतु का स्वागत करते हुये हम आशा करते हैं कि भारत वास्तविक उल्लास में अपनी प्रगति के चरण बढ़ाता हुआ बढ़ेगा।

-विमल किशोर आर्य
वैदिक प्रवक्ता
गोमीती नगर, लखनऊ
मो. 7499698294

निर्वाचन

आर्य समाज-बावल टांडा, जिला-झांसी

प्रधान	::	देव सिंह आर्य
मन्त्री	::	राम किशोर यादव
कोषाध्यक्ष	::	जितेन्द्र सिंह

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा-शाहजहाँपुर

प्रधान	::	श्री प्रमोद कुमार आर्य
मन्त्री	::	श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष	::	श्री राजेश कुमार आर्य

आर्य उप प्रतिनिधि सभा बहराइच/श्रावस्ती

प्रधान	::	डॉ. कन्हैयालाल आर्य
मन्त्री	::	श्री जय प्रकाश पटवा
कोषाध्यक्ष	::	श्री पृथ्वी राज सिंह

वैदिक संस्कृति के आदर्श सम्वाहक–स्वामी बलदेव जी आर्य

-आचार्य रामज्ञानी आर्य (पूर्वप्रधानाचार्य)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के समस्त पदाधिकारियों एवं अंतरंग सदस्यों की एक आवश्यक बैठक-नारायण स्वामी भवन, ५, मराबाई मार्ग, लखनऊ में दि. ३१.०१.२०१६ को आहुत की गई थी। जिसकी अध्यक्षता माननीय श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने की तथा संचालन स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती-मंत्री ने किया।

उक्त बैठक के पूर्व स्वामी बलदेव जी आर्य के निधन की सूचना प्राप्त हुई। माननीय श्री देवेन्द्रपाल जी, प्रधान ने उस बैठक को शोक श्रद्धांजलि के रूप में परिवर्तित कर दिया।

प्रदेश से आये हुए प्रतिनिधियों ने जिलावार स्वामी बलदेव जी आर्य के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। सर्व प्रथम आचार्य रामज्ञानी आर्य,देवरिया ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा-

''एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते।
एकोनुभुङक्ते सुकृतमेक एव दुष्कृतम्।।''मनु. (४/२४०)

अकेला ही जीव जन्म लेता है और अकेला ही मृत्यु को प्राप्त होता है। जीव अकेला ही धर्म का फल सुखल्प में तथा अधर्म का फल दुखरूप में भोगता है। परन्तु ''कीर्तियस्य सः जीवति'' अर्थात् संसार में जिसका सुयश है, वह मनता नहीं है। अपितु शरीर त्याग कर भी अमर है। परमात्मा समस्त सम्बद्धजनों को उनके वियोग के दुस्सह दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

वेदों पर आघृत सत्य सनातन वैदिक धर्म के अनुसार आचरण व्यवहार से ही वास्तविक सुख-समृद्धि और शान्ति प्राप्त की जा सकती है। धर्म के नाम पर विभिन्न साम्प्रदायिक मत-मतान्तरों से कलह कटुता और हिन्सा प्रतिहिंसा के कारण असत्याचरण से बहुविधर प्रदूषण फैल रहा है। प्राकृति उपादानों का अत्यन्त दोहन क्षरण से प्रकृति विक्षुब्ध होगी और प्रदूषित पर्यावरण प्राणी मात्र के लिए हानिकर होगा। भारतीय अरण्य संस्कृति और याज्ञिक जीवन का मर्म समझने की आवश्यकता है। सभ्यता और संस्कृति की मूल थाती संस्कृत साहित्य में सुरक्षित है। स्वामी बलदेव जी आर्य इन अर्थो में आदर्श पुरूष थे। जो हमारे लिए प्रेरणादायी हैं। वे अध्ययन शील पैनी तर्कशक्ति वाले, निर्भिक, दृढ़-साहसी स्वाभिमानी, महर्षि दधीचि जैसे व्यक्तित्व वाले सरल प्रकृति के व्यक्ति थे। क्योंकि शतवर्षो में होने वाले, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली मेंजो हुआ था, प्राचारार्थ जनपद देवरिया में आर्य समाज मन्दिर पर मेरे नेतृत्व में बैठक चल रही थी उसमें प्रदेशीय प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी एवं स्वामी बलदेवजी महाराज पधारे थे। स्वामी जी को कुछ प्रसाद ग्रहण करने के लिए कहा-स्वामी जी ने कहा कि पहले यज्ञ, तब प्रसाद ग्रहण। तात्पर्य यह कि-बिना सन्ध्या यज्ञ किए अर्थात पंच महायज्ञों को करते हुए, सर्वदा समाज के कार्यो में लगे रहते थे। वैदिक धर्म के सिद्धान्तों व नियमों के प्रति उनकी अटूट आस्था थी। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मेंमान-अपमान, सुख-दुख, जीवन-मुत्यु आदि द्वन्द्वों से ऊपर उठ कर महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी के अधूरे कार्योको पूर्ण करने में आजीवन संलग्न रहे। ''इत्योम्''।

-लेखक-आचार्य रामज्ञानी आर्य (उपेदशक)
महामंत्री-जिला आर्य सभा देवरिया (उ.प्र.)
पूर्व मंत्री-शिक्षक संघ देवरिया(उ.प्र.)
पूर्व प्रधानाचार्य-लारटाऊन, देवरिया (उ.प्र.)
सम्पर्क सूत्र-०६६५६३२६७५६, ०८५७४२१८३५७

जन्म दिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ

डॉ० चन्द्रपाल आर्य महामंत्री आर्य वीरदल उ०प्र० मेरठ ने अपने सुपुत्र धनज्जय आर्य का जन्म दिवस यज्ञ करके मनाया गया सभा मंत्री धर्मश्वरानन्द सरस्वती ने भी पहुँचकर आशीर्वाद दिया।

केन्द्रीय मंत्री उमा भारती जी का गुरूकुल पूठ में आगमन

४ जनवरी को गुरूकुल में केन्द्रीय मंत्री उमा भारती जी का आगमन हुआ सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सहित सभी कुलवासियों क्षेत्रवासियों ने उनका भव्य स्वागत किया यज्ञशाला में यज्ञ किया वृक्षारोपण किया ब्र० के आसन और धनुर्विधा के कार्यक्रम किये। उन्होंने गुरूकुल की प्रशंसा की तथा पूठ ग्राम की उन्नति के लिए इसे गंगा ग्राम घोषित किया सभी क्षेत्रवासी उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रहे हैं।

सम्भल में ऋग्वेद पारायण यज्ञ

प्रदीप आर्य ने अपने निवास पर ऋग्वेद यज्ञ सम्पन्न कराया स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री जी ब्रह्म रहे। अन्तिम दिन प्रीतिभोज भी हुआ लोगों ने सत्संग लाभ उठाया।

तताारपुर ग्राम में सामवेद पारायण यज्ञ

आर्यसमाज तताारपुर के माध्यम से सामवेद पारायण यज्ञ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ गुरूकुल तताारपुर एवं पूठ के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया। पूरे ग्राम का सहयोग रहा ओमदत्त आर्य-वीरपाल सिंह - सत्यपाल शास्त्री मा० महेन्द्र सिंह मा० कर्णसिंह ओमवीर सिंह आर्य ग्राम सभा प्रधान अरूण आर्य जयदेव शास्त्री आदि- आदि विशेष योगदान रहे पूरे यज्ञ में लगभग २० यजमान बनें।

शान्तियज्ञ एवं शोक सभा

पहलवान नेत्र पाल सिंह पटना मोड़ ततारपुर का हार्ट अटैक से ६५ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया उनका शान्तियज्ञ गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने किया स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभामंत्री ने सभा की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की एवं प्रवचन देकर धैर्य दिलाया।

आर्य समाज मल्लपुर - मुरादाबाद के प्रधान श्री हरस्वरूप सिंह मलिक जी का बीमारी से निधन हो गया वे लगभग ६० वर्ष के थे उनका शान्तियज्ञ स्वामीधर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री ने सम्पन्न किया और सभा की ओर से श्रद्धांजलि दी।

आर्य समाज पसवाड़ा में प्रधान कु० सुरेन्द्र सिंह आर्य ने अपने पिता सूरज सिंह एवं चाचा प्रकाश चन्द्र आर्य की स्मृति में यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन कराया स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने प्रवचन देकर लाभान्वित किया।

असहिष्णुता के ठेकेदार मौन क्यों?

राजनाथ सिंह 'सूर्य'

पश्चिम बंगाल के मालदा और उसके बाद बिहार के पूर्णिया में जो कुछ हुआ, वह इस बात का सबूत है कि समाज के एक वर्ग में असहिष्णुता की पैठ अत्यंत गहरी है, जो हिंसक होने से गुरेज नहीं करती। एक अत्यंत महत्वहीन व्यक्ति जिसकी साख उसके मोहल्ले तक में नहीं है और जो रासुका में निरूद्ध हो चुका है यदि उत्तर प्रदेश के एक मंत्री के कथन से उत्तेजित होकर उसी प्रकार की अभिव्यक्ति पैगम्बर मोहम्मद साहब के बारे में कर देता है, तो उसको क्या इतना महत्व दिया जाना चाहिए। क्या देश भर में लाखों लोगों को सड़कों पर उतरना चाहिए और क्या पुलिस चौकी और हिन्दुओं की बस्ती को आग लगा देना चाहिए। ऐसा जिन लोगों ने किया है उन्होंने असहिष्णुता की चरम स्थिति का परिचय दिया है। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, कम से कम उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के लोगों को तो स्मरण ही होगा कि बौद्धों द्वारा मुसलमानों के साथ किए गए व्यवहार का विरोध करने के लिए नमाज के बाद सड़क पर उतरकर जैन मुनि महावीर और गौतम बुद्ध की प्रतिमा को तोड़ते हुए किस प्रकार का उग्र प्रदर्शन किया गया था।

उत्तर प्रदेश के मंत्री आजम खां आजकल जिस भाषा का प्रयोग कर विभिन्न प्रकार की घटनाओं पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, उससे उत्तेजित होना अस्वाभाविक नहीं है लेकिन ऐसी किसी भी उत्तेजना की प्रतिक्रिया हिंसात्मक नहीं हुई, होनी भी नहीं चाहिए। यह बात अलग है कि आजम खां ने सत्ता का सहारा लेकर अपने विरोधियों का मुंह बंद करने का प्रयास किया है। अखिलेश यादव सरकार उस पर मौन है जब सभी ओर से यहां तक कि सौ से अधिक मुस्लिम इमामों ने फ्रांस की घटना की निंदा की थी तब भी आजम खां ने अपनी प्रतिक्रिया से उनके कृत्यों का समर्थन किया था। हिन्दू महासभा के जिस व्यक्ति ने आजम खां की समलैंगिकता सम्बन्धी अभिव्यक्ति पर सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया की थी, शायद ही वह इतना महत्वपूर्ण बन पाता जैसा उस पर उग्र प्रतिक्रिया के माध्यम से किया गया है।

जहां बिहार के मुख्यमंत्री ने पूर्णिया कांड पर चुप्पी साध रखी है वहीं मालदा की घटना को बंगाल की मुख्यमंत्री ममता मनर्जी ने स्थानीय लोगों और सीमा सुरक्षा बल के बीच निरंतर चलने वाला संघर्ष बताया है। इस्लामी आतंकवादियों से ज्यादा खतरनाक उनकी ढाल बनकर खड़े होने वाले राजनीतिक दोषी हैं। जब कभी कोई आतंकी घटना होती है या उग्रवाद का घिनौना चेहरा बेनकाब होता है, मुस्लिम समुदाय की ओर से इस्लाम की सहिष्णुता की मिसाल पेश किए जाने के लिए वक्तव्यों की आंधी चल पड़ती है। मुसलमानों की देशभक्ति संदेह से परे है। प्रश्न यह है कि देशभक्ति पर इस प्रकार के वक्तव्यों के अलावा कहां से संदेह का संशय खड़ा किया गया। ऐसा वक्तव्य यदि आतंकी गतिविधियों में संलग्न या उनके मददगारों की गिरफ्तारी पर होता है तो उसका निहितार्थ कुछ और ही होता है। हमारे देश में दादरी की एक घटना पर जिसमें कुछ लोगों की संलिप्तता थी, ऐसी तूफानी प्रतिक्रिया हुई जिससे ऐसा लगता था कि इस देश में मुसलमान असुरक्षित है। एक व्यक्ति की उत्तेजनावश हत्या हो या हजारों की संख्या में सड़क पर उतरकर आगजनी, लूटपाट और हत्या करने का मामला हो, दोनों ही निंदनीय है।

लेकिन क्या कारण है कि एक व्यक्ति की हत्या होने पर जिन लोगों ने देश-विदेश में भारत की छवि बिगाड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी वे और वे भी जो तटस्थ होने का दावा करते हैं, हजारों लोगों के उन्मादी कृत्य पर मौन हैं, क्यों ?

क्या कारण है कि इस प्रकार की हिंसात्मक घटनाएं वहीं घटित हो रही हैं जहां मुस्लिम आबादी की बहुलता है। बंगाल और बिहार के सीमावर्ती इलाकों में बांग्लादेशियों को घुसपैठ की जो खुली छूट मिलती रही तथा जिससे सत्ता पाने के लिए लाभान्वित राजनीतिक दल उनकी ओर से नजर हटाकर शह देते रहे, उसने सीमान्त इलाकों में स्थिति को अत्यंत विस्फोटक बना दिया है जो प्रगट होने के लिए किसी बहाने का इंतजार करती रहती है।

(उत्तराखण्ड टाइम्स से साभार)

आर्य वर की आवश्यकता

शालिनी आर्य पुत्री नवीन चन्द्र आर्य लम्बाई 5 फिट 2 इंच सुन्दर गोरी संस्कारी आर्य कन्या ड्राइंग पेन्टिंग से एम.ए. फाइनल कर रही गृह कार्य में दक्ष कन्या हेतु उच्च व्यवसायी या उच्च सरकारी नौकरी आर्य समाजी परिवार से वर की आवश्यकता है। विवाह संस्कार आर्य समाज में हो पायेगा। निवासी नैनीताल उत्तराखण्ड मोबाइल नं. 9758688256

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस पर कार्यक्रम के कुछ दृश्य

योग द्वारा भयंकर रोगों को भी दूर किया जा सकता है-

धर्मेश्वरानन्द -

योग द्वारा भयंकर रोगों को ठीक किया जा सकता है क्योंकि योग एक जीवन पद्धति है योग एक कला है, योग प्राणशक्ति का संचय है, योग जीवन की दिनचर्या है, योग सदैव ऊर्जा प्रदान करता है, योग हमारी मानसिक - बौद्धिक - आत्मिक - शारीरिक कमजोरियों को दूर करता है योग प्राणायाम द्वारा दिव्य शक्ति प्राप्त होती है - महर्षि मनु कहते हैं - प्राणायाम द्वारा इन्द्रियों के दोष इस प्रकार भस्म हो जाते हैं जैसे सुनार अग्नि द्वारा सोने (स्वर्ण) के दोष भस्म करके उसे कुन्दन बना देता है उसी प्रकार मन-चित्त इन्द्रियाँ - शरीर निर्दोष होकर पुष्ट हो जाता है प्राणायाम सर्वप्रथम जठराग्नि को प्रदीप्त करता है जठराग्नि ठीक होने से भोजन समय पर पचता है भूख समय पर लगती है खून शुद्ध बनता है जो भी विकार हैं वे भी सभी नष्ट हो जाते हैं ओर प्रत्येक बीमारी पर तुरन्त नियन्त्रण करता है। प्रायः बीमारी पाचनतन्त्र के कमजोर होने पर ही प्रभावी होती दिखाई देती है अतः प्राणायाम उसकी जड़ समाप्त कर देती है और स्नायुतन्त्र - पाचनतन्त्र को सुदृढ़ करता है जो स्वास्थ्य को स्थाई भाव प्रदान करता है आवश्यकता है उसके नैरन्तर्य की उसे दिनचर्या का अंग बनाया जाये और प्रातः सायं नियमित अभ्यास किया जाये प्राकृति चिकित्सा अथवा आयुर्वेदिक चिकित्सा साथ में जोड़ दी जायें तो फिर जीवन में बीमारी के दर्शन नही हो सकेंगे आप सदैव स्वस्थ रहकर प्रभु की कृपा पाने के अधिकारी बनेंगे। लगभग ८० प्रतिशत बीमारियां मानसिक कमजोरी से ही पैदा होती है और पनपती है और बढ़कर एक भयंकर रूपधारण कर जीवन लीला को समाप्त कर देती है अतः प्राणायाम मन को भी बलिष्ठ बनाकर आत्मविश्वास को जागृत करता है। सूर्य की ऊर्जा सूर्य में दी प्राणायाम से प्राप्त होती है चन्द्रमा की ऊर्जा चन्द्र भेदी प्राणायाम से मिलती है जो हाई ब्लडप्रेशर पर तुरन्त चमत्कार करता है ब्लड प्रेशर स्वतः ही नियन्त्रण में रहता है यह ऋषि - मुनियों के अनुसन्धान का साक्षात् उपहार है जिसे आज हम उपेक्षित कर रहे है - अतः इस विश्वयोग दिवस पर हम प्रत्येक नागरिक को सन्देश देना चाहते है - कि योग - योगासन प्राणायाम किसी मत-पन्थ सम्प्रदाय अथवा राजनीति का मुद्दा नहीं यह तो मानव मात्र के कल्याण के लिए है महर्षि पतंज्जली २५०० वर्ष पहले इस धरा पर आये उस समय कोई मत-पन्थ सम्प्रदाय था ही नहीं ये तो २००० वर्ष के पश्चात ही इतिहास है अतः उस समय प्रत्येक प्राणी के कल्याण के लिए उन्होंने योगदर्शन की रचना की थी - योगदर्शन में धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति समाधि द्वारा कैसे की जा सकती है उसका पूरा व्याख्या अष्टांग योग द्वारा प्रतिपादित किया है। इसी क्रम में जन सामान्य के लिए बहिरंग योग में आसन एवं प्राणायाम का क्रम आता है और उसी को आज योग नाम देकर प्रचारित किया जा रहा है वास्तव में यह योगा है जो ३ तथा ४ क्रम में आता है इसी की उपयोगिता आज प्रत्येक मानव अनुभव कर रहा है इसके द्वारा पिछले २५०० वर्षो में हजारों लाखों लोगों ने मोक्ष पाना की साधना की है करोड़ों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया है और भयंकर बीमारियों से छुटकारा प्राप्त किया है वैज्ञानिक तथ्य यह है कि शरीर में अनावश्यक जो कार्बन है वह प्राणायाम से भस्मीभूत हो जाता है आसनों से शरीर में ऊर्जा एवं लचीलापन आता है शरीर का स्नायुतन्त्र प्रभावशाली होकर स्फूर्ति पैदा होती है जो सामान्य रूप से आज प्रत्येक व्यक्ति तुरन्त अनुभव करता है विशेष बीमारियों को वैज्ञानिक रूप से लाभान्वित करता है। मेरे द्वारा कराये गए योग शिविरों में अब तक लाखों लोगों ने लाभ उठाया है शिविर से पूर्व मेरा कहना रहता है कि आप अपना वजन तोले - ब्लड़प्रेशर चैक रायें - शुगर चेक करायें इसके अतिरिक्त कोई बीमारी हो उसे चैकअप करा लें मेरे शिविर में एक सप्ताह के बाद पुनः चैकअप करायें तभी तो विश्वास होगा तो आप आश्चर्य करेंगे कि सभी को आश से अधिक प्रत्येक बीमारी में लाभ हुआ वजन कम होना सामान्य बात है लेकिन कैंसर जैसी बीमारी शुगर जैसी बीमारी - बात रोग से पीड़ित व्यक्तिओं को ६० प्रतिशत लाभ हुआ अतः मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि यदि योगासन - प्राणायाम द्वारा प्रतिदिन अभ्यास करते हुए प्राकृतिक चिकित्सा आयुर्वेद का सहारा ले लें तो कोई भी व्यक्ति पूरे संसार में बीमार नहीं रह सकता है तभी तो उपनिषदकार ने लिखा- ''सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः'' कोई बीमार नहीं रहना ।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।